



National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177

NJHSR 2025; 1(60): 107-109

© 2025 NJHSR

www.sanskritarticle.com

प्रवीण बहुगुणा

शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत-
विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रो. रचना वर्मा मोहन

आचार्या,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत-
विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार निर्धारण में सहपाठी दबाव की भूमिका

प्रवीण बहुगुणा, प्रो. रचना वर्मा मोहन

सारांश

शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी स्वयं की योग्यतानुसार अपने तथा समाज के विकास के लिए कार्यरत रहते हैं। किशोरावस्था के दौरान विद्यार्थी दूसरों के मनोभावों को ग्रहण करने में सक्षम हो जाते हैं। यह तूफान, तनाव, संघर्ष, विरोध और जटिल भावनाओं की अवस्था है। विद्यार्थी अमूर्त तर्क, चिंतन-मनन करने में सक्षम हो जाते हैं। इस समय विद्यार्थी 9 वीं से 12 वीं कक्षा में अध्ययनरत रहते हैं। इस अवस्था में एक ओर बाल्यावस्था की समाप्ति तथा दूसरी ओर किशोरावस्था का आरंभ हो चुका होता है। अध्ययन के समय विद्यार्थी अपनी कक्षा में अपने सहपाठियों के साथ मिलजुल कर कार्य करते हैं। कक्षा में सहपाठियों का दबाव विद्यार्थी के सामाजिक व्यवहार पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालता है। जिसके कारण विद्यार्थी के सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन हो जाता है। सहपाठी दबाव विद्यार्थी पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के दबाव डालता है। सकारात्मक दबाव एवं नकारात्मक दबाव से विद्यार्थी की शारीरिक दशा, मनोदशा, शैक्षिक दशा और आध्यात्मिक दशा में परिवर्तन आ जाता है। जिसके कारण विद्यार्थी की आचार-विचार, मूल्य, सामाजिक व्यवहार तथा आजीविका निर्णय क्षमता प्रभावित हो जाते हैं। सकारात्मक दबाव में विद्यार्थी अपने कर्तव्यों का पालन, राष्ट्रीय धरोहर और पर्यावरण का संरक्षण, प्राणी मात्र पर उदारता की भावना और अच्छे संस्कारों को ग्रहण करता है। नकारात्मक दबाव में विद्यार्थी के अन्दर अनेक प्रकार के अवगुण एवं दोष आ जाते हैं। विद्यार्थी श्रेष्ठ जनों का अपमान, चोरी, लड़ाई-झगड़ा, अनैतिक कार्य, धूम्रपान और नशीले पदार्थों का सेवन आदि कार्यों में लिप्त हो जाता है। उपरोक्त गुणों एवं अवगुणों से विद्यार्थी के सामाजिक जीवन में परिवर्तन होने लगता है। समाज अच्छे गुणों वाले को स्वीकार करता है और अवगुणों वाले का परित्याग कर देता है।

मुख्य शब्द – विद्यार्थी, सामाजिक व्यवहार, सहपाठी दबाव

प्रस्तावना

मानव का व्यवहार अत्यन्त जटिल तथा अविश्वसनीय होता है। मानव व्यवहार का अध्ययन वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक एक रुचि का विषय रहा है। प्राचीन दार्शनिकों ने इसका अध्ययन करने के लिए स्वयं का निरीक्षण किया। लेकिन आधुनिक मनोविज्ञान दूसरों के व्यवहार के निरीक्षण पर बल देता है। मानव के व्यवहार को जानने के लिए शिक्षा का होना अति आवश्यक है। गुरु एवं शिष्य के मध्य चलने वाली सुव्यवस्थित प्रक्रिया ही शिक्षा है। शंकराचार्य जी ने कहा है कि "सा विद्या ब्रह्मशक्तिप्रदा" अर्थात् शिक्षा वही है जो व्यक्ति को ब्रह्म की स्थिति में पहुंचा दे। आधुनिक युग में शिक्षा का उद्देश्य बालकों की मनोदैहिक शक्तियों (Psycho- Physical Capacities) का सर्वांगीण विकास है न कि मोक्ष की प्राप्ति। शिक्षा से व्यक्ति विवेकशील होकर सत्य की ओर अग्रसर, कर्तव्यनिष्ठ तथा सभी में ईश्वर का दर्शन करता है। शैशवावस्था से लेकर किशोरावस्था तक विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास हो जाता है। किशोरावस्था में विद्यार्थी तार्किक चिन्तन करने लगता है। इस अवस्था में विद्यार्थी अधिकतर अपने सहपाठियों के साथ रहता है। विद्यार्थियों पर सहपाठी दबाव का सकारात्मक एवं नकारात्मक दबाव पड़ता है। कक्षा के समय जिस प्रकार विद्यार्थी के सहपाठी गतिविधि करते हैं उसी प्रकार वह भी करता है। सहपाठी के आचार-विचार एवं व्यवहार का विद्यार्थी के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव पड़ने लगता है।

Correspondence:

प्रवीण बहुगुणा

शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत-
विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सहपाठी के सकारात्मक दबाव में विद्यार्थी अपने माता-पिता, गुरु आदि की आज्ञापालन एवं अपनी संस्कृति, धरोहर-विरासत, पर्यावरण का संरक्षण, प्राणीमात्र पर दया का भाव और नैतिक मूल्यों का पालन करता है। नकारात्मक दबाव में विद्यार्थी के अन्दर अनेक प्रकार के अवगुण एवं दोष आ जाते हैं। जिसके अन्तर्गत विद्यार्थी श्रेष्ठ जनों का अपमान, चोरी, लड़ाई-झगड़ा, अनैतिक कार्य, धूम्रपान और नशीले पदार्थों का सेवन आदि कार्यों में लिप्त रहता है। सहपाठी के सकारात्मक दबाव एवं नकारात्मक दबाव से विद्यार्थी के सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है। किशोर विद्यार्थी का शैक्षिक, आचार-विचार, मूल्य और दिन प्रतिदिन की प्रक्रिया आदि में भी बदलाव आ जाता है।

किशोरावस्था

बाल्यावस्था तथा वयस्कावस्था के मध्य चलने वाली प्रक्रिया को किशोरावस्था कहते हैं। किशोर अवस्था को आंग्ल भाषा में Adolescence कहते हैं। इस अवस्था में विद्यार्थियों की वृद्धि और विकास में आश्चर्यजनक रूप से परिवर्तन होता है। किशोर विद्यार्थी भी शिशु की तरह अत्यधिक चंचल मन, शांत, उत्तेजित, संवेदनशील और भावुक होते हैं। इस अवस्था में वृद्धि और विकास तेजी से होता है। जिसके कारण नवीन परिवर्तन दिखाई देने लगते हैं अर्थात् विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास होता है। इस अवस्था में चिंता, भय, प्रेम, ईर्ष्या और क्रोध कामवासना एवं लालच आदि देखने को मिलते हैं। किशोरावस्था को प्रायः तनाव, जटिल भावनाओं और दबाव की अवस्था कहा जाता है। इस अवस्था में संवेग अधिक अस्थायी और परिवर्तनशील होते हैं, किंतु गति बहुत प्रबल होती है। किशोर अपने संवेगों को पूरी तरह नियंत्रण में नहीं रख पाते हैं। किशोर विद्यार्थी समाज के कानून-नियमों, हितों और संबंधों की परवाह नहीं करता है। किशोर विद्यार्थी मित्रों के साथ अपने संबंध को अच्छे बनाने के लिए अपने आप को मित्रों से जुड़े रहने का प्रयत्न करता है। वे अपने मित्रों को आदर्श मानने लगते हैं और जैसा मित्र करता है। वे भी वैसा करने का प्रयास करते हैं। इस अवस्था में बुद्धि अपनी लगभग चरम सीमा तक पहुंच जाती है तथा विद्यार्थी की अमूर्त सोच, तार्किक चिंतन, सूक्ष्म और गहन विचार शक्ति एवं एकाग्रता आदि सभी मानसिक शक्तियों का विकास हो जाता है।

सामाजिक व्यवहार

सामाजिक व्यवहार से अभिप्राय है कि व्यक्ति द्वारा दूसरे के साथ निरंतर परस्पर क्रिया, योगदान तथा सहयोग करने से है। जिसमें एक सदस्य दूसरे सदस्य को प्रभावित करता है। मानव व्यवहार सदस्यों के बीच परस्पर क्रिया के कारण होता है। मानव सामाजिक व्यवहार उन सभी क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं और गतिविधियों से है, जो किसी व्यक्ति या समूह द्वारा समाज में किया जाता है। सामाजिक व्यवहार वह तरीका है, जिससे लोग आपस में संपर्क करते हैं। एक-दूसरे के साथ अपने विचार और भावों को साझा करते हैं और अपने कार्य कौशल के जरिए समाज में विशिष्ट स्थान बनाते हैं। सामाजिक व्यवहार के माध्यम से समाज के बीच सामंजस्य और आपसी समझ को बनाये रखा जाता है। समाज के साथ सहयोग की भावना को विकसित

करना आवश्यक है। सामाजिक व्यवहार में एक व्यक्ति द्वारा किसी बड़े व्यक्ति का आदर सम्मान करना, अपने से बड़ों को आदर पूर्वक सम्मान देना, अपने से छोटों को प्रेमपूर्वक पुकारना, दूसरे व्यक्ति को सिखाना कि झूठ मत बोलना, गलत कार्यों को न करना, सभी के साथ भ्रातृत्व या मित्रता की तरह रहना तथा स्वच्छता को बनाये रखना ही सामाजिक व्यवहार है। सामाजिक व्यवहार एक अटूट बन्धन है जो समाज के प्रत्येक सदस्यों को जोड़ता है तथा उन्नति के पथ पर ले जाता है। सद्भावहार से विश्व में शान्ति और समाज का विकास होता है। सामाजिक व्यवहार के माध्यम से सभी के प्रति विनम्रता, सहयोग, प्रेम, शान्ति, विश्वास, एकता, सदाचार और अहिंसा आदि प्रकार के मूल्यों का विकास होता है।

सहपाठी दबाव

एक बालक जब अपने माता-पिता तथा परिवार से अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त कर लेता है तो वह निश्चित आयु में औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालय में प्रवेश प्राप्त करता है। विद्यालय में आकर विद्यार्थी लघु समाज में बृहद् समाज से भी परिचित होने लगते हैं। विद्यार्थी विद्यालय में अपने गुरु, विद्यालय के कर्मचारियों व विद्यालय के अन्य विद्यार्थियों के सम्पर्क में आ जाता है। विद्यार्थी के अपनी कक्षा में जो विद्यार्थी होते हैं वे उसके सहपाठी होते हैं। सहपाठी दबाव को आंग्ल भाषा में Peer Pressure कहते हैं। सहपाठी से अभिप्राय है एक ही कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों से है। दबाव से तात्पर्य है कि जब किसी व्यक्ति को किसी कार्य को करने के लिए मजबूर किया जाता है। सहपाठी दबाव में विद्यार्थी जब अपने सहपाठी को ऐसे कार्य करने के लिए मजबूर करते हैं। जिसे वह करना नहीं चाहता है, लेकिन सहपाठी दबाव के कारण उसे वह कार्य को करना पड़ता है। विद्यार्थी के मन में यह भय रहता है कि यदि उसने अपने सहपाठियों की बात नहीं मानी तो वे उसे अकेला छोड़ देंगे। सहपाठी दबाव दो (2) प्रकार का होता है-

• सकारात्मक दबाव

• नकारात्मक दबाव

जब विद्यार्थी के सहपाठी उसे सही मार्ग पर चलने को कहते हैं तो यह सकारात्मक सहपाठी दबाव होता है। जब विद्यार्थी को सहपाठी गलत मार्ग पर चलने को कहते हैं, तो यह नकारात्मक सहपाठी दबाव होता है। विद्यार्थी न चाहते हुए भी अपने सहपाठियों की बात मान लेता है। विद्यार्थी जब अपने सहपाठी के कहने पर प्रतिदिन अपने माता-पिता व गुरु के चरणों का वंदन, अपने से बड़ों का आदर-सम्मान करना, प्रतिदिन विद्यालय में आना, विद्यालय का कार्य करना, राष्ट्रीय धरोहर व पर्यावरण का संरक्षण करना, प्राणीमात्र पर दया का भाव रखना तथा नैतिक मूल्यों का विकास करता है तो वह सकारात्मक दबाव में आ जाता है। इससे राष्ट्र की उन्नति होती है। इसके विपरीत जब विद्यार्थी चोरी, नशीले पदार्थों का सेवन, व्यर्थ की लड़ाई-झगड़ा, लूटमार, अपने से बड़ों का अपमान, अनैतिक कार्यों में लिप्तता, माता-पिता व गुरु की आज्ञा का उल्लंघन आदि प्रकार के कार्य करता है तो वह नकारात्मक सहपाठी दबाव में आ जाता है। इससे राष्ट्र का पतन भी दिखाई पड़ता है।

सामाजिक व्यवहार निर्धारण में सहपाठी दबाव

मानव सामाजिक जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामाजिक व्यवहार के माध्यम से मानव के व्यक्तित्व गुणों का पता चलता है। मानव का व्यवहार परिवार, समाज, मित्र तथा विद्यालय में अपने सहपाठियों से प्रभावित होता है। सहपाठी दबाव एक ऐसा सामाजिक दबाव है जो मानव के विचारों, आदर्शों, व्यवहार और निर्णय क्षमता को प्रभावित करता है। यह सहपाठी दबाव सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार का होता है। सामाजिक व्यवहार किसी व्यक्ति के सोचने, बोलने और कार्य करने के कौशलों से पता चलता है। किशोरावस्था के समय विद्यार्थी के व्यवहार पर सहपाठियों के दबाव का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है जो इस प्रकार से है-

आचार-विचार - किशोर विद्यार्थी विद्यालय में अपने सहपाठियों के साथ रहकर जिस प्रकार से सहपाठी का रहन-सहन, खान-पान, वेष-भूषा, उठना-बैठना, हाव-भाव, अनुशासन, दृष्टिकोण, पवित्रता, रीति-रिवाज, परम्परागत धारणा और आध्यात्मिक आचरण होता है। सहपाठी दबाव में आकर इन सभी अपने जीवन में ले आता है।

मूल्य - अध्ययन के समय सहपाठी विद्यार्थी को मूल्यों को अपनाने का दबाव डालता है। इसके अन्तर्गत परोपकार, आज्ञा पालन, सहयोग, ईश्वर में विश्वास, जीवों पर दया का भाव, भाईचारा, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, समानता, कर्तव्यनिष्ठ, परिश्रम, आदर और सम्मान आदि प्रकार के मूल्यों को अपनाने को कहता है। यह सकारात्मक दबाव के अंतर्गत आ जाता है। यदि सहपाठी इसके विपरीत कार्य करने का दबाव बनता है तो वह नकारात्मक दबाव में आ जाता है। विद्यार्थी सहपाठी की प्रसन्नता के लिए या उनके साथ रहने के लिए कहे गये कार्य को न चाहते हुए भी करता है। इसके माध्यम से विद्यार्थी के सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है।

आजीविका निर्णय - विद्यार्थी के आजीविका निर्णय पर भी सहपाठी हस्तक्षेप करते हैं। सहपाठी उन्हें वही विषयों को लेने के लिए कहते हैं जो उन्होंने स्वयं चयन किए हैं। सहपाठी के दबाव में आकर विद्यार्थी अपने सहपाठियों को मना नहीं कर सकता है। जब विद्यार्थी अपनी रुचि, योग्यता और क्षमता के बिना सहपाठी के दबाव में आकर विषयों का चयन करता है। तो विद्यार्थी आगे उस विषय में असफल हो जाता है। असफलता के माध्यम से किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है।

अच्छी आदतों का विकास - विद्यालय में अनेक प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं तो सहपाठी सभी छात्रों को उसमें भाग लेने को कहते हैं। सभी विद्यार्थी सक्रिय होकर उसमें अपना योगदान देते हैं। जिसके माध्यम से विद्यार्थी सफलता प्राप्त करके पुरस्कार प्राप्त करते हैं। इसके माध्यम से विद्यार्थी के अन्दर आत्मविश्वास बढ़ता है। फिर विद्यार्थी अग्रिम कार्यक्रम की तैयारी करता है। वे विद्यालय स्तर से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक सफलता प्राप्त करते हैं। विद्यार्थी की सामाजिक पहचान बढ़ जाती है और कुछ लोग विद्यार्थी के आदर्श भी बन जाते हैं।

सामाजिक व्यवहार पर नकारात्मक दबाव

सहपाठी के नकारात्मक दबाव से विद्यार्थी को अनेक प्रकार के कष्टों से गुजरना पड़ता है। विद्यार्थी नशे का सेवन, असत्य बोलना, समाज विरोधी कार्य करना, अपराध की दुनिया में प्रवेश करना आदि प्रकार के दोषों का सामना करता है। जिसके माध्यम से विद्यार्थी का समाज में कोई सम्मान नहीं करता है। नकारात्मक दबाव से विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य पर असर पड़ने लगता है। विद्यार्थी के व्यवहार में

चिड़चिड़ापन, तनाव, घृणा, अवसाद और क्रोध आदि प्रभाव देखने को मिलते हैं। इन प्रभावों के कारण विद्यार्थी समाज से अलग हो जाता है, और उसका समाज में कोई अस्तित्व नहीं रहता है। समाज में उसका अस्तित्व न होने के कारण विद्यार्थी अकेलापन महसूस करने लगता है।

निष्कर्ष

किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार के निर्धारण में सहपाठियों का विशेष योगदान होता है। सहपाठियों का आचार-विचार और व्यवहार जिस प्रकार से होता है विद्यार्थी भी अपने सहपाठियों के दबाव में आकर उनके ही पद चिन्हों पर चलते हैं। यदि सहपाठी का सकारात्मक दबाव होगा तो विद्यार्थी समाज में बेहतर स्थान प्राप्त करता है। जिसके माध्यम से वे नैतिकता की दिशा की ओर अग्रसर होकर राष्ट्र को नई दिशा प्रदान करते हैं। अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम, अहिंसा के मार्ग पर चलकर समाज के आदर्श बन जाते हैं। समाज उनके योगदान को जीवनभर याद रखता है। सहपाठी के नकारात्मक दबाव में विद्यार्थी सही मार्ग से दूर चला जाता है। उसका जीवन भर पतन होता है, और समाज भी उसका बहिष्कार कर देता है। अतः विद्यार्थी को अपने सहपाठियों से सोच समझकर उनके साथ समय व्यतीत करना चाहिए तथा नकारात्मक दबाव में नहीं आना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. गुप्ता, एस. पी. (2019) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
2. गुप्ता, एस. एवं अग्रवाल जे. सी. (2014) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, शिप्रा पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
3. तिवारी, शारदा (2024) शिक्षा का समाजशास्त्र, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।
4. दुबै. मनीष एवं दुबै. विभा (2014) शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
5. पाण्डेय, के. पी. (2013) नवीन शिक्षा मनोविज्ञान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
6. बि, पद्ममित्राश्रीनिवासः (2012) शिक्षायाः मनोवैज्ञानिकाधाराः, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
7. मंगल, एस. के. (2008) शिक्षा मनोविज्ञान, PHI Learning Private Limited, दिल्ली।
8. मानव, आर. एन. (2017) अभिगम तथा विकास का मनोविज्ञान, सी/ओ आर. पब्लिकेशन्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, मेरठ।
9. मिश्रा, महेन्द्र कुमार (2014) उदीयमान भारतीय समाज, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।
10. लाल, रमन बिहारी (1991) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
11. सिंह, मनोज कुमार (2014) शिक्षा और समाज, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।
12. सुलेमान, मुहम्मद (2007) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
13. त्रिपाठी, शालिग्राम (2019) शिक्षा मनोविज्ञान, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
14. <https://health.vikaspedia.in> 05/02/25
15. <https://egyankosh.ac.in> 05/02/25
16. <https://www.unicef.org> 05/02/25
17. <https://study.com> 05/02/25
18. <https://www.sciencedirect.com> 05/02/25